PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

मई 2008 ISSUE 0508 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

प्रभु येशु, प्रभुओं के प्रभु और राजाओं के राजा, हमारे बीच हैं!

क्या आपने कभी जीवित प्रभु को देखा है? क्या आपको उन्होंने कभी दर्शन दिए ? क्या आपको उनकी उपस्थिति का अनुभव कभी हुआ है ? क्या आप यह विश्वास करते हैं कि प्रभु येशु जीवित हैं, हमारे बीच उपस्थित हैं व कार्यरत हैं ? यदि हाँ, तो आप यह दूसरों को कैसे प्रमाणित कर सकते हैं कि वह जीवित हैं और हमारे बीच हैं? आपका जवाब होना चाहिए– उनके द्वारा किये अद्भुत् चिन्हों, घटनाओं, चमत्कारों, संदेशों, और आध्यात्मिक व शारीरिक रोग चंगाईयों से जो उन पर विश्वास करने वालों को प्रार्थना करने पर, वचन पढ़ने या सुनने पर व स्तुति करने पर मिलती हैं। और यह सब हम साक्षात् रुप में आज भी **"जीवन-धाम"** में चल रही प्रार्थना में देख सकते हैं। यदि आपने फरीदाबाद में अब तक "जीवन–धाम" सैक्टर–9, सन्त अन्थोनी स्कूल, फरीदाबाद में हर इतवार प्रातः 9.30 बजे से चलने वाली प्रार्थना में भाग नहीं लिया है, तो अभी भी वक्त है। स्वंय आकर देख लीजिए कि सत्य क्या है। स्वर्गराज्य निकट है। परख कर देखो कि प्रभु कितना भला है। वह हमारा स ष्टिकर्ता है जिसे कोई नहीं मार सकता या जिससे कोई जीत सकता है, जिससे कोई नहीं छिप सकता या बच सकता है क्योंकि वह सर्वव्यापी, सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान् अनादि-अनन्त ईश्वर है। आप जीवित परमेश्वर की शक्ति, दया व प्रेम के साक्षी बन जाईए, विनीत व शुद्ध हृदय से प्रार्थना कर उनके दर्शन कीजिए जिससे आप विश्वास के साथ कह सकें, पूर्ण विश्वास के साथ कि **"मैंने जीवित प्रभु येशु को देखा व अनुभव किया है।"** यह अनुभव और एहसास आपके जीवन को बदल डालेगा और आप प्रभु येशु ख्रीस्त में नई स ष्टि बन जाओगे ठीक वैसे ही जैसे साऊल (सन्त पौलुस) बन गया। साऊल को जीवित प्रभु के दर्शन हुए **(प्रेरित-चरित 22:3-21)** और बाद में ख्रीस्त विश्वासियों के क्रूर अत्याचारी से वह सच्चे धर्मप्रचारक के रुप में प्रेरित पौलुस बन गये, कई बार जीवित प्रभु का साक्ष्य दिया**(1कुरिन्थियों 15:8)**,और अन्त तक उनके विश्वास पर अटल रहे, कष्ट, अपमान और कोड़े सहे, और विश्वास की खातिर (रोम में उनका वध किया गया) शहीद हुए। यही है अटल विश्वास का एक जीता -जागता उदाहरण। यदि आपने प्रभु को देख लिया है तो क्या आप में ऐसा द ढ़ विश्वास है ? यदि नहीं, तो प्रभु से पवित्र आत्मा का वरदान माँग लें, जो भीरु को निर्भय और यमल (संशयकर्ता) को द ढ़ विश्वासी बना देगा, जो स्वंय साक्ष्य देगा **(योहन 15:26)** और बाद में आप को भी साक्ष्य दिलवायेगा।

सत्य यह है कि मसीह हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए क्रूस पर मरे जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा है। वह कब्र में रखे गये और तीसरे दिन जी उठे **(1कुरिन्थियों 15:3-4)**। उसी येशु मसीह नाज़री के नाम के सामर्थ्य से सभी मनुष्य भले-चँगे हो जाते हैं क्योंकि ईश्वर ने उन्हें, जीवन के अधिपति, म तकों में से पुनर्जीवित किया है। उन्हें न तो कोई कब्र, न म त्यु और न अधोलोक कैद कर सकती या रोक सकती है। इसलिए **"किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा मुक्ति नहीं मिल सकती, क्योंकि समस्त संसार में येशु नाम के सिवा मनुष्यों को कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है, जिसके द्वारा हमें**

शेष भाग प ष्ठ 2 पर ★

हे फातिमा की माता मरियम! अपने दुःखी, पीड़ित बच्चों को शान्ति प्रदान करो!

मई का महीना माता मरियम की पवित्र जपमाला को समर्पित है। इस महीने की 13 तारीख को हम पवित्र माला की माँ मरियम, जो फातिमा, पुर्तगाल में सर्वप्रथम इसी दिन सन् 1917 में तीन चरवाहों के बच्चों को प्रकट हुई थीं, का पर्व, **फातिमा की माता का पर्व,** मनाते हैं। इसी दिन माँ मरियम ने मार्तोस और सान्तोस परिवार के तीन बच्चे लूसिया सान्तोस (उम्र 10 वर्ष), फान्सिस्को (9) और उसकी बहन जसिन्ता (7 वर्ष) को फातिमा के कोवा डा इरिया नामक जगह पर प्रत्यक्ष दर्शन देकर उनसे प्रार्थना एवं पवित्र माला विनती करने का आह्वान दिया जिससे विश्व युद्ध (सन् 1914-1919) समाप्त हो और धरती पर

(शेष भाग प ष्ठ 2 पर)

"जहाँ ईर्ष्या और स्वार्थ है, वहाँ अशान्ति और हर तरह की बुराई पाई जाती है। किन्तु ऊपर से आई हुई प्रज्ञा मुख्यतः पवित्र है और वह शान्तिप्रिय, सहनशील, विनम्र, करूणामय, परोपकारी, पक्षपातहीन और निष्कपट भी है।"(याकूब 3:16-17)

(पृष्ठ 1 का शेष भाग)

शान्ति कायम हो, पापियों का मन परिवर्तन हो और सभी इन दर्शनों द्वारा माँ मरियम की मध्यस्थता और ममता की शक्ति का अनुभव कर लें और धार्मिक जीवन बितायें। इसी स्थान पर माँ मरियम ने पवित्र माला की रानी के रुप में इन बच्चों को छः बार सन् 1917 में (13 मई, 13 जून, 13 जुलाई, 19 अगस्त, 13 सितम्बर और 13 अक्टूबर 1917) और सन् 1920 में (सिर्फ लूसिया) को एक बार दर्शन दिये।

*जुलाई 13 के दर्शन में ही माँ मरियम ने **"येशु से विनती"** वाली प्रार्थना सिखाकर हर माला के भेद के बाद उसे करने का आग्रह किया था। **"हे मेरे येशु, हमारे पापों को क्षमा कर, नरक की आग से हमें बचा। सभी आत्माओं को स्वर्ग की ओर ले चल, विशेष कर उन आत्माओं को जिन्हें तेरी दया की अति आवश्यकता है।"***

लूसिया, जो इन सब से बड़ी थी, पिता परमेश्वर की कृपा से धर्मबहन बन कर अपना पूरा जीवन प्रभु के लिए अर्पित कर चुकी और सन् 2004 में ही उनका देहान्त हुआ। उनके द्वारा पवित्र माला की रानी ने तीन रहस्यों को प्रकट किया था जिसमें से एक संत पापा जॉन पॉल द्वितीय की सन् 1981 में फातिमा माता के पर्व के दिन हुए हमले (गोली चलाई गई) से जीवन की रक्षा की थी। यह माँ मरियम का अनोखा चमत्कार था जिसे स्वंय सन्त पापा ने स्वीकार किया और माँ मरियम तथा पवित्र माला विनती के प्रति लाखों विश्वासियों के हृदय में सच्ची भक्ति भावना जागृत की। हम भी पवित्र माला विनती प्रतिदिन करते हुए माँ मरियम के साथ प्रभु येशु से प्रार्थना करें और शान्ति की रानी, ईश्वर पुत्र की माँ, पवित्र आत्मा के मन्दिर से अपेक्षा करें– अपनी तथा सारे संसार की ज़रुरत एवं शान्ति के लिए इस अत्यधिक प्रभावशाली प्रार्थना का उपयोग करें।

यहाँ एक साधारण, पर अत्यन्त सुन्दर नोवेना प्रार्थना का उल्लेख किया जा रहा है, जो अनेक कृपाएँ प्रदान करती है। इस नोवेना को विशेषकर मई 5-13 तक (नौ दिन तक) हर रोज़ की जाती है।

हे पवित्र माला की रानी! आप फातिमा में गड़रियों के बच्चों को प्रकट हुई और आपने ही उन्हें पवित्र माला के छिपे रहस्य को समझाने और सिखाने की अपनी सर्वप्रथम इच्छा प्रकट की। इस पवित्र माला के रक्षादायक रहस्य का ध्यान करके हमें उसके फल से सम्पन्न होने के लिये, इस धरती में पूर्ण शान्ति स्थापित करने के लिये, और पापियों के मन परिवर्तन का हमें उपकरण बनाने के लिये हम पर कृपा कर दीजिये। हे माँ! इस माला को भक्तिपूर्वक करने के लिये हमारी सहायता कर। इस माला से हम विभिन्न कार्यों की अपेक्षा करते हैं ।

हम अपने-अपने निवेदन रखें।

यदि आपके पुत्र वह हमारे लिए करना चाहें, तो उन्हें हमारे लिए करने की कृपा कर दें। इस प्रार्थना को शुरु करने वाले हम सभी लोगों को आपके पुत्र के प्रशंसनीय प्रिय जन बन कर जीने के लिए और स्वर्ग के अनन्त जीवन को प्राप्त करने के लिये हे पवित्र माँ! हमारे लिये प्रार्थना कर। आमेन।

*(**हे पिता हमारे**, **प्रणाम मरिया** और **पवित्र त्रित्व की स्तुति** तीन–तीन बार करें)*

पृष्ठ 1 का शेष भाग ★

***मुक्ति मिल सकती है(प्रेरित-चरित 4:10-12)। येशु** का अर्थ है **"ईश्वर बचाता है"** और मसीह या **ख्रीस्त** का अर्थ है **"ईश्वर द्वारा अभिषिक्त"**। वही इस संसार में ईश्वर के इकलौते पुत्र होते हुए भी हमारे उद्धार के लिए मनुष्य के रुप में जन्मे और इस तरह वह पूर्ण ईश्वर व पूर्ण मनुष्य बने जिससे वह हमारे और ईश्वर के बीच आकाश के नीचे और धरती के ऊपर एकमात्र समर्थ मध्यस्थ बनें जो हमारा मेल ईश्वर से करा दे। इसके लिए उनको स्वंय को क्रूस पर बलि चढ़ा देना (हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए, पाप व शैतान पर विजय प्राप्त करने के लिए) तथा तीसरे दिन जी उठाया जाना (मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिए, पिता द्वारा आत्मा की शक्ति से अनन्त काल तक हमारे संग रहने के लिए, हमारे लिए स्वर्ग में स्थान का प्रबंध करने के लिए, हमारे लिए पिता से प्रार्थना व मध्यस्थ करने के लिए तथा धर्मग्रन्थ की पूर्ति के लिए) अनिवार्य था।*

वास्तव में प्रभु येशु का पुनरुत्थान यदि नहीं हुआ होता, तो हमारा उन पर विश्वास भी व्यर्थ होता, क्योंकि वे मृतकों में से एक गिने जाते जो अपने मक्सद के लिए शहीद हो गये। फिर न तो वह किसी को दिखाई देते और न ही कोई उन पर विश्वास करता, उनके शिष्य भी उन्हें भूल जाते, न ही प्रतिज्ञात पवित्र आत्मा की वर्षा होती और न ही कोई पश्चाताप कर बपतिस्मा ग्रहण करता और न ही आज करोड़ों लोग (जो ख्रीस्तीय हैं) उनके अनुयायी होते। न तो यह मासिक पत्रिका होती और न मैं इस विषय में इस पत्रिका में कुछ लिखता क्योंकि वह तो सिर्फ इतिहास की एक घटना मात्र बन कर रह जाती जो आज वर्तमान काल में किसी के लिए उपयोगी या प्रेरणात्मक न होती। न ही कोई उनके नाम पर अदभुत् चमत्कार करता या रोग चंगाई की घोषणा करता। नतीजा यह होता कि अन्त में सभी नास्तिक या शैतान के चुंगल में फँसे अन्धकार की सन्तान बन जाते और पूरी दुनिया तेजी से बुराई व पाप की ओर अग्रसर होती तथा आपसी युद्ध में, महामारी में और प्राकृतिक विपदाओं में शायद कब की खत्म भी हो गई होती। तब ईश्वर की सृष्टि का मुकुट, मनुष्य, एक अभिशाप, एक विद्रोही व ईश-निन्दक या ईश-विरोधी प्रजाति बन जाता। उसकी स्थिति दयनीय और लज्जाजनक होती। उसका जीवन आज ऐसा न होता जैसे कि अब वास्तव में है बल्कि पशु-जीवन से भी गया-गुजरा और दूबर होता। आपसी प्रेम, क्षमा व इंसानियत ही समाप्त हो जाती और मनुष्य के अन्दर शैतान एक खूँखार भेडिये के समान कार्यरत रहता। सभी पाप के गुलाम बने रहते, मृत्यु पर कभी विजय प्राप्त न कर पाते, सीधे नरक की न बुझने वाली अग्नि में ईश्वर के क्रोध द्वारा ड़ाल दिये जाते और कभी स्वर्ग के द्वार तक भी पहुँच नहीं पाते।

*पर ईश्वर ने ऐसा कुछ नहीं होने दिया है क्योंकि ईश्वर ने संसार से इतना **प्रेम** किया कि उसने अपने **इकलौते पुत्र को संसार के लिए अर्पित कर दिया** और बाद में उसे महिमान्वित कर, पुनजीवित कर अपने दाहिने (स्वर्ग में) बिठा दिया, सारा अधिकार उन्हें सौंप दिया जिससे कि जो उस पर **विश्वास** करे वह **अनन्त जीवन** प्राप्त करे। वह प्रभु पर विश्वास करने के कारण अनन्त जीवन के लिए जी उठे, ख्रीस्त के साथ उनकी महिमा के सहभागी बने, प्रभु येशु की कृपा द्वारा ईश्वर की प्रिय सन्तान कहलाये जाये और उसके उत्तराधिकारी बने। यही ईश्वर का मुक्ति-विधान है जो सदियों से गुप्त व रहस्यमयी रहा और अब सब मानव जाति के लिए प्रकट हो गया है। पुनरुत्थान ही हमारे विश्वास की नींव है, हमारी आशा का स्त्रोत है, और हमारे आनन्द का विषय है। येशु ही वह कोने के पत्थर हैं, जिसपर यह कलीसिया टिकी है और जिनके द्वारा सबको मुक्ति मिली है, सबका मेल ईश्वर से हो गया है। उन्होंने अपनी निर्धनता द्वारा हमें धनवान बना दिया, निष्पाप होते हुए भी अपने दु:खभोग द्वारा हमारे पापों का प्रायश्चित किया, अपने ऊपर हमारा दण्ड लेकर हमें शान्ति प्रदान की है, अपने क्रूस द्वारा हमें मुक्ति व महिमा का चिन्ह प्रदान किया, अपने पवित्र लहू द्वारा हमारे सारे पाप धो डाले, अपने घावों द्वारा हमें भला-चंगा कर दिया, अपनी मृत्यु द्वारा हमें अनन्त मृत्यु से बचाया और अपने पुनरुत्थान द्वारा हमारे लिए स्वर्ग का द्वार खोला व पवित्र आत्मा को हमारी सहायता के लिए भेजा। क्योंकि प्रभु ने हमसे प्रतिज्ञा की है– **पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ। जो मुझमें विश्वास करता है, वह मरने पर भी जीवित रहेगा। (योहन 11:25)***

शेष भाग पृष्ठ 3 पर ★

प्रभु-ईश्वर यह कहता है -"भेड़ों के भटक जाने पर जिस तरह गड़ेरिया उनका पता लगाने जाता है, उसी तरह मैं अपनी भेड़ें खोजने जाऊँगा। कुहरे और अँधेरे में जहाँ कहीं वे तितर-बितर हो गई हैं, मैं उन्हें वहाँ से छुड़ा लाऊँगा। मैं उन्हें राष्ट्रों में से निकाल कर और विदेशों से एकत्र कर उनके अपने देश में लौटा लाऊँगा।"(एज़ेकिएल 34:12-13)

जीवित परमेश्वर के अद्भुत साक्ष्य- जीवन-धाम से

प्रभु के पवित्र वचन ने मुझे शुद्ध किया व पूर्ण स्वास्थ्य दिया..!

28 वर्ष पुरानी शराब पीने की आदत से व शारीरिक बलहीनताओं से मुक्ति मिली!

येशु की स्तुति हो ! येशु को धन्यवाद!

मेरा नाम घनश्याम दास है और मेरी उम्र लगभग 55 वर्ष की हो गई है। मैं यहाँ जीवन-धाम में पिछले छह महीने से आ हा हूँ। मेरी एक बहुत बड़ी कमज़ोरी और मेरे जीवन का सबसे बड़े कष्ट का कारण था मेरी प्रतिदिन शराब पीने की बुरी आदत। मैं पिछले लगभग 28 सालों से रोज़ शराब पीता आ रहा हूँ। और इसकी लत्त से मुझे छुटकारा दिलाने में कोई भी कामयाब न हो सका था। रोज़ मैं कम-से-कम एक पूरी बोतल तो पी ही जाता था। इस कारण मेरे शरीर में खून कम और शराब ज्यादा दौड़ने लगी थी और मुझे अपनी नौकरी भी अपने स्वास्थ्य के साथ गँवानी पड़ी। पिछले 2 साल से मैं कहीं काम पर नहीं जा सका जिसकी एक और वजह मेरी रीढ़ की हड्डी में परेशानी थी। पिछले साल मार्च के महीने में अचानक मेरे पैर में दर्द शुरू हो गया जो बढ़कर रीढ़ की हड्डी तक फैल गई। बल्लबगढ़ में कई डॉक्टरों को मैंने दिखाया। आराम न आने पर देसी इलाज भी करवाया। मैंने बीस हज़ार रूपये से भी अधिक इलाज पर खर्च कर डाले, पर कोई राहत न मिली। चलना-फिरना मेरे लिए मुश्किल हो गया और छह महीने तक मैं व्हीलचैयर में ही घूमता रहा।

एक सज्जन के कहने पर मैं जीवन-धाम में पहली बार व्हीलचैयर में आया। पवित्र वचन द्वारा मुझे अपनी गलतियों व पापों का एहसास हुआ। हर इतवार मैं प्रार्थना में शामिल होता रहा। प्रभु की कृपा से मेरी टाँगों को शक्ति मिलने लगी और मैं सहारा लेकर खड़ा होने लगा। 2 महीने पहले मैंने व्हीलचैयर छोड़ दी और डण्डे के सहारे से चलने लगा। कुछ दिनों बाद मैंने डण्डा भी छोड़ दिया। प्रभु पर मेरा विश्वास दृढ़ हो गया और मैं बस यह प्रार्थना करता रहा कि मेरी शराब पीने की आदत किसी तरह से छूट जाये। प्रभु ने मेरी सहायता की और इसके लिए मुझे विशेष कृपा दी। पहले तीन दिन तो इसे छोड़ने पर मैं बीमार पड़ गया। पर चौथे दिन से मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। मेरे अन्दर शराब के प्रति घृणा पैदा हो गई और दोबारा कभी पीने की मुझे इच्छा ही नहीं हुई। प्रभु की कृपा से मैंने एक महीने से शराब को हाथ भी नहीं लगाया है। इसके साथ-साथ प्रभु येशु ने मुझे सभी दुर्बलताओं से भी मुक्त कर दिया। अब मैं बिना किसी के सहारे लिए चल लेता हूँ और बड़े आराम से सीढ़ियाँ भी चढ़ लेता हूँ। प्रभु से मिली इन कृपाओं के लिए मैं उन्हें लाखों बार धन्यवाद देता हूँ। **घनश्याम दास**, फरीदाबाद

मैंने कहा,"मैं प्रभु के सामने अपना अपराध स्वीकार करूँगा।" तब तूने मेरे पाप का दोष मिटा दिया। इसलिए संकट के समय प्रत्येक भक्त तुझसे प्रार्थना करता है। (स्तोत्र 32:5-6)

पृष्ठ 2 का शेष भाग ★

"यदि मसीह पर हमारा भरोसा इस जीवन तक ही सीमित है, तो हम सब मनुष्यों में से सबसे अधिक दयनीय है।"**(1 कुरिन्थियों 15:19)** पर ऐसा नहीं है क्योंकि हमारा लक्ष्य स्वर्गराज्य का अनन्त जीवन है– एक ऐसा पुरस्कार जिसे प्राप्त करने के लिए हम यहाँ पुण्य कर्म, त्याग, प्रार्थना, उपवास, संघर्ष इत्यादि कर रहे हैं जिससे हमारे लिए स्वर्ग में एक अक्षय पूँजी जमा हो। ***हमारा ईश्वर जीवन्त परमेश्वर है, वह मृतकों का नहीं, जीवितों का ईश्वर है। प्रभु येशु राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु हैं, आदि और अन्त हैं जिनके पास सारा अधिकार है, जिनके पास मृत्यु और अधोलोक की कुँजियाँ हैं।*** उसी मुक्तिदाता पर सभी विश्वास करें, उसकी स्तुति व आराधना करें। **आमेन।**

प्रभु येशु ने मेरी जीवन भर की लाइलाज दमे की बीमारी से मुझे मुक्ति दे दी!

येशु की स्तुति हो ! येशु को धन्यवाद!

मैं, मनीश (उम्र 18 वर्ष), पिछले चार इतवार से "जीवन-धाम" की प्रार्थना सभा में शामिल हो रहा हूँ। मेरे यहाँ आने का कारण था मेरा प्राणघातक रोग–दमा। जब मैं दो महीने का हुआ, तब से मुझे साँस लेने में तकलीफ शुरू होने लगी। तब से लेकर अठारह सालों तक इस रोग के साथ मेरा संघर्ष चलता रहा और डॉक्टरों से इलाज चलता रहा। एक डॉक्टर को दिखाने पर वह यह कहने लगा कि मुझे बच्चों वाली दमे की बीमारी हुई है जो बारह वर्ष की या फिर अठारह वर्ष की उम्र में अपने आप चली जायेगी। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। फरीदाबाद से लेकर दिल्ली (AIIMS), मुज़फ्फरनगर और मुंबई तक के करीब-करीब सभी डॉक्टरों को मेरे माता-पिता अब तक मुझे दिखा चुके हैं, पर कहीं कोई स्थायी आराम नहीं मिलता था क्योंकि यह बीमारी लाइलाज जो थी। वे मेरे इलाज पर बचपन से ही खर्च करते आ रहे हैं पर सब जगह उन्हें निराशा ही हाथ लगी। मैं रोज़ एक कैप्सूल लेता था और हमेशा अपने साथ जेब में हवा देने वाला पम्प रखता था जो साँस फूलने पर मेरी साँस की नलियों को खोल देता था। इसके बगैर मैं कहीं जा ही नहीं सकता था।

मेरे पड़ोस में रहने वाली एक आंटी ने एक बार मुझे इतवार सुबह सैक्टर–9 जीवन–धाम में जा कर प्रार्थना में भाग लेने को कहा। मैं उनके साथ ही पहली बार इतवार को जीवन–धाम में आया था। तब से मुझे आराम मिलता गया ओर अठारह साल से जो मैं दवा ले रहा था, वह मैंने लेनी छोड़ दी। अब मुझे अपने साथ हवा देने वाला पम्प भी रखने की कोई ज़रूरत नहीं है। एक महीने के अन्दर मैं पूरी तरह इस भंयकर रोग से मुक्त हो गया। यह प्रभु की दया और बहुमूल्य कृपा ही है, जो मैं आज खुशी-खुशी सबके सामने अपनी गवाही दे रहा हूँ। उस मुक्तिदाता ईश्वर को स्तुति और महिमा। **मनीश**, फरीदाबाद

"स्वस्थ शरीर के बराबर कोई सम्पत्ति नहीं और प्रसन्न मन के बराबर कोई सुख नहीं।" (प्रवक्ता ग्रन्थ 30:16)

प्रभु ने कहा, "प्रभु; प्रभु एक करूणामय तथा कृपालु ईश्वर है। वह देर से क्रोध करता और अनुकम्पा तथा सत्यप्रतिज्ञता का धनी है। वह हज़ार पीढ़ियों तक अपनी कृपा बनाये रखता और बुराई, अपराध और पाप क्षमा करता है।"(निर्गमन 34:6-7)

दयासागर प्रभु ने मुझे चंगा कर एक नया जीवन दिया!

गले के कैन्सर व अन्य रोगों से मुक्ति मिली!

येशु की स्तुति हो ! येशु को धन्यवाद!

मैं, प्रेम, (उम्र 50वर्ष), अपनी गले की बीमारी के कारण पिछले एक साल से बहुत परेशान व दुःखी थी। कभी-कभी मेरी साँस भी फूल जाती थी। डॉक्टर को दिखाने पर जाँच से (एक्स-रे रिपोर्ट) यह पता चला कि मेरे गले में कैन्सर है। मैंने पुन्हाणा में, सोहना में और बल्लबगढ़ में डॉक्टरों को दिखाया व इलाज करवाया। एक साल में ही दस हज़ार रूपये से भी अधिक खर्च कर डाले। पर कोई फायदा नहीं हुआ। साथ ही एक साल से मैं अपना एक हाथ दर्द के कारण ऊपर नहीं उठा पाती थी।

एक दिन कालोनी की एक बहन ने मुझे ऐसी जगह के बारे में बताया जहाँ बिना किसी खर्चे के प्रार्थना के द्वारा ही रोगी चंगे हो जाते हैं। पूछने पर उन्होंने 'जीवन–धाम' का नाम लिया और यहाँ का पता दिया। अगले इतवार से मैं यहाँ की प्रार्थना में शामिल होने लगी। कुछ दिनों में ही मेरे गले का कैन्सर वाला भाग कट-कट कर निकलता गया। मैंने दवा लेनी भी छोड़ दी और प्रभु येशु पर पूरा भरोसा रख कर मैं प्रार्थना करती रही। अब मेरा हाथ भी पूरा ऊपर उठने लगा है।

यही नहीं, प्रभु येशु ने मुझे और भी कृपाँए दी हैं। मेरे पेट में जो कुछ हफ्तों से सूई-सी चुभती थी, वो भी बन्द हो गई है। तीन-चार महीने से मेरी आँखों की रोशनी भी बिल्कुल खत्म हो गई थी। मुझे कुछ भी नहीं दिखाई देता था और मेरी आँखों से आँसू भी नहीं आते थे– आँखों में रूखापन आ गया था। पर प्रभु येशु की दया से आज मेरी आँखों की रोशनी भी वापिस आ गई है व उनमें रूखापन भी खत्म हो गया है। मैं अब पूर्ण रुप से स्वस्थ हो गयी हूँ। **प्रेम**, फरीदाबाद

"...प्रभु ने मेरा उपकार किया है। उसने मुझे म त्यु से छुड़ाया। उसने मेरे आँसू पोंछ डाले और मेरे पैरों को फिसलने नहीं दिया।" (स्तोत्र 116:7-8)

मिस्सा बलिदान का समय:

मकान न०.696/सैक्टर-22 फरीदाबाद में हर इतवार - शाम 6:30 बजे
प्रतिदिन - प्रातः 10:30 बजे मिस्सा बलिदान चढ़ाया जाता है। यहाँ पर 24 घण्टे आराधना होती है। आप भी हमारे साथ प्रार्थना में शामिल हो सकते हैं।

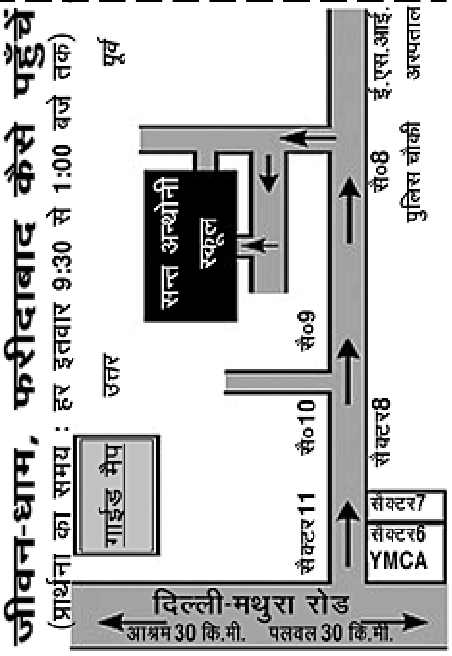

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

8) प्रेरित - चरित
i) अध्याय 26-28

प्रेरित–चरित के ग्रन्थ के अध्याय **26 से 28** तक से लिये गये प्रस्तुत वाक्यों में रिक्त स्थान भरें, उनकी वाक्यांश संख्या अध्याय सहित बतायें तथा उत्तर में यह भी लिखें कि ये वाक्य **सर्वप्रथम** किसने कहे?

1) _____आप_____ को मालूम हो कि _____ का यह _____-विधान ग़ैर-_______ को सुनाया जा रहा है।

2)_____बारह_____ दिन–रात_____ की _______ में द ढ़ बने रहते हुए उस_____ की____ देखने की आशा करते हैं।

3)_____लोगों को _____करते-करते और _____रहते _____दिन हो गये हैं।

4)_____! तुम _____कर रहे हो। तुम्हारा प्रकाण्ड_______ तुम को_______ बना रहा है।

5) यह____ से तो बच गया है, _____ न्याय-_____ ने उसे _____ नहीं रहने दिया।

6) हमें न केवल_____ और_____ हानि उठानी पडेगी, बल्कि अपने_____ भी।

7)____ हम____ से आपके_____ सुनना चाहते हैं, क्योंकि____ मालूम है कि इस_______ का सर्वत्र _______ होता है।

8)यह_____ प्राणदण्ड या_____ के योग्य कोई _______ नहीं करता।

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

8) प्रेरित - चरित
h) अध्याय 22-25

1) क्या, येरूसालेम, तैयार, मेरे, बातों, तुम्हारा। (25:9) राज्यपाल फ़ेस्तुस ने कहा
2) आत्मा, स्वर्गदूत, बोला।(23:9) फरीसी दल के कुछ शास्त्रियों ने कहा
3) लुसियस, मैं, लोगों, मुक़दमे, फ़ैसला। (24:22) राज्यपाल फ़ेलिक्स ने कहा
4) गमालिएल, चरणों, पूर्वजों, संहिता, व्याख्या, शिक्षा।(22:3) पौलुस ने कहा
5) बन्दी, भेजना, अभियोगों, उल्लेख, असंगत। (25:27) राज्यपाल फ़ेस्तुस ने कहा
6) पूर्वजों, ईश्वर, चुना, इच्छा, धर्मात्मा, दर्शन, मुख, वाणी। (22:14) अनानीयस ने कहा
7) मन्दिर, सभाग ह, शहर, विवाद, उकसाते।(24:12) पौलुस ने कहा
8) अभियोगी, पहुँचेंगे, सुनवाई।(23:35) राज्यपाल फ़ेलिक्स ने कहा

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**
ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सति) क्रमानुसार होने चाहिएँ।
ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।
घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।
ङ) सहीं उत्तरों से मिलाने के लिए अपने उत्तरों की एक प्रति अपने पास भी रखें।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित...........हैं ?
क्या आप दुःखी...........हैं ?
क्या आप रोगी...........हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति...........है ?

आपको सान्त्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्थोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः 9:30 बजे से 1:00 बजे तक 'जीवन-धाम' फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर प्रभु येशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

अन्त में यह। आप सब-के-सब एकमत, सहानुभूतिशील, भ्रात प्रेमी, दयालु तथा विनम्र बनें। आप बुराई के बदले बुराई न करें और गाली के बदले गाली नहीं, बल्कि आशीर्वाद दें। आप यही करने बुलाये गये हैं, जिससे आप विरासत के रूप में आशीर्वाद प्राप्त करें...।(1सन्त पेत्रुस 4:8-9)

Edited & Published by Anthony, JEEVAN DHAM, 696/Sec-22, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.